जागरूकता सह प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रतिवेदन

"केज एक्वाकल्चर: एक लाभदायक आजीविका विकल्प"

जनजातीय उप योजना (टीएसपी) के तहत

भा कृ अनु प -केंद्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान ,जलकृषि विभाग , मुंबई ने आदिवासी समाज के लिए आदिवासी उप योजना (टीएसपी) के तहत "केज एक्वाकल्चर: एक लाभदायक आजीविका विकल्प" पर जागरूकता सह प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। 3057 "शिव गांव, ब्लॉक राजगुरु नगर (खेड़), पुणे, महाराष्ट्र से 23.02.2022 को आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में भामासखेड़ जलाशय के पास रहने वाले शिवे गांव के 53 आदिवासी मछुआरों (पुरुष-48, महिला-6) ने भाग लिया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य जलाशय में पिंजरा पालन का प्रदर्शन करना है जहां आदिवासी मछुआरे जलाशयों से मछली पकड़ने पर निर्भर हैं।

डॉ. कपिल सुखदाणे, वैज्ञानिक (आईसीएआर-सीआईएफई) ने प्रशिक्षुओं को भामखेड जलाशय में केज कल्चर संचालन के महत्व और इसकी व्यवहार्यता के बारे में विस्तार से बताया। गतिविधियों को शुरू करने से पहले प्रशिक्षुओं को पिंजरे के निर्माण, जाल की सफाई, जाल बदलने, मछली भंडारण और चारा प्रबंधन के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई। जलाशयों में केज कल्चर पर दो विस्तार बुलेटिन(मराठी और अंग्रेजी) भी इस अवसर पर जारी की गईं। डॉ. माधुरी पाठक, वैज्ञानिक, (आईसीएआर-सीआईएफई) ने केज सिस्टम में संभावित उम्मीदवार की प्रजातियों और उनकी पालन पर प्रकाश डाला। उन्होंने पिंजड़े की खेती के संचालन में महिलाओं की भूमिका पर भी जोर दिया। इस प्रशिक्षण में केज फार्मिंग के अर्थशास्त्र पर भी चर्चा की गई। डॉ. थोंगम इबेम्चा चानू, वैज्ञानिक (आईसीएआर-सीआईएफई) ने पिंजरा मछली पालन के लिए केंद्र और राज्य सरकार की योजनाओं और सब्सिडी प्रावधानों के बारे में प्रतिभागियों को जानकारी दी। उन्होंने जनजातीय लोगों के लिए केंद्र और राज्य सरकार द्वारा दी जाने वाली कल्याणकारी योजनाओं के बारे में भी प्रतिभागियों को बताया और उनसे इसका लाभ उठाने का आग्रह किया।

कार्यक्रम का आयोजन डॉ. मुनील कुमार, प्रमुख, एक्वाकल्चर डिवीजन, आईसीएआर-सीआईएफई की देखरेख में किया गया था।

प्रशिक्षण कार्यक्रम में पिंजरा पालन के लिए प्रशिक्षण किट, 7 तैरने वाले पिंजरे और इसके सामान का वितरण भी शामिल है। क्षेत्र भ्रमण के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। इस कार्यक्रम को तीन मराठी समाचार पत्रों में कवर किया गया था।

(स्रोत: भा कृ अनु प -केंद्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान)